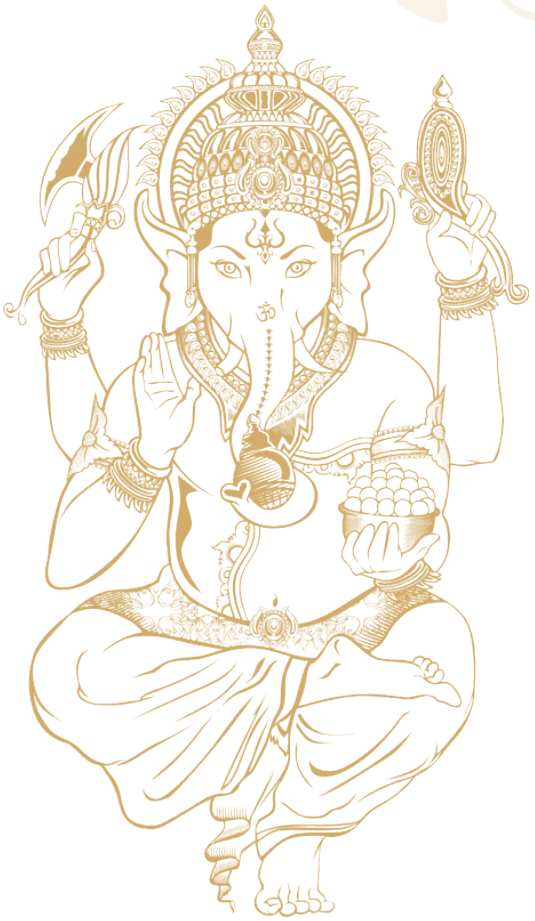

Aaditya

V

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121698203

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
29/08/1996	जन्म तिथि	12/09/1998
गुरुवार	दिन	शनिवार
घंटे 15:42:00	जन्म समय	18:40:00 घंटे
घटी 24:02:59	जन्म समय(घटी)	31:13:12 घटी
India	देश	India
Jaipur	स्थान	Kota
26:53:00 उत्तर	अक्षांश	25:11:00 उत्तर
75:50:00 पूर्व	रेखांश	75:58:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:26:40	स्थानिक संस्कार	-00:26:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:04:48	सूर्योदय	06:10:53
18:49:45	सूर्यास्त	18:33:42
23:48:41	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:11

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
गुरु 13वर्ष 6मा 12दि	19:29:03	धनु	लग्न	कुंभ	29:03:40	चन्द्र 3वर्ष 4मा 14दि
शनि	12:31:59	सिंह	सूर्य	सिंह	25:44:02	राहु
13/03/2010	22:03:14	कुंभ	चंद्र	वृष	18:50:10	26/01/2009
13/03/2029	28:57:37	मिथु	मंगल	कर्क	20:39:21	26/01/2027
शनि 16/03/2013	08:08:40	कन्या	बुध	सिंह	14:01:36	राहु 09/10/2011
बुध 24/11/2015	14:03:04	धनु व	गुरु व	कुंभ	29:41:41	गुरु 04/03/2014
केतु 02/01/2017	27:01:34	मिथु	शुक्र	सिंह	13:15:55	शनि 08/01/2017
शुक्र 03/03/2020	12:12:48	मीन व	शनि व	मेष	09:08:01	बुध 28/07/2019
सूर्य 13/02/2021	14:26:46	कन्या व	राहु व	सिंह	07:31:05	केतु 15/08/2020
चन्द्र 15/09/2022	14:26:46	मीन व	केतु व	कुंभ	07:31:05	शुक्र 15/08/2023
मंगल 24/10/2023	07:30:16	मक व	हर्ष व	मक	15:29:45	सूर्य 09/07/2024
राहु 30/08/2026	01:32:36	मक व	नेप व	मक	05:46:21	चन्द्र 08/01/2026
गुरु 13/03/2029	06:37:21	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	11:39:57	मंगल 26/01/2027

लग्न-चलित

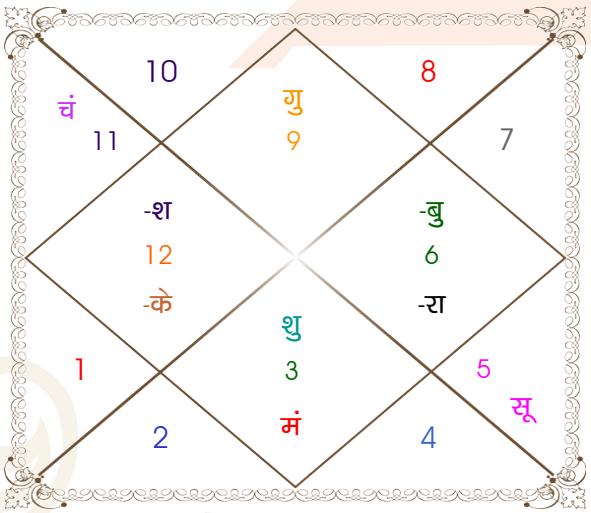

लग्न-चलित

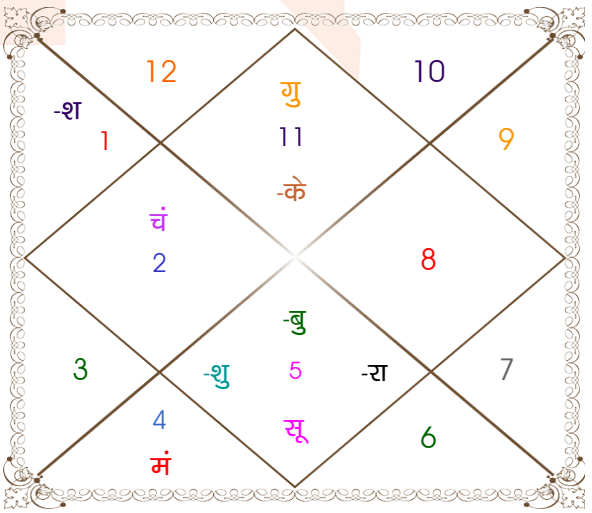

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	वैश्य	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	क्षेम	वध	3	1.50	--	भाग्य
योनि	सिंह	सर्प	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	शुक्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	कुम्भ	वृष	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	30.50		

¡कपजलं का वर्ग मेष है तथा V का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूV मिलान के अनुसार ¡कपजलं और V का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

¡कपजलं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

सप्तमो यदा भौमः गुरूणां च निरीक्षिता।
तदास्तु सर्वसौख्यं च मंगली दोषनाशकृत्।।

सप्तम मंगल को गुरु देखता हो मंगली दोष कV जाता है।

क्योंकि ¡कपजलं कि कुण्डली में सप्तम मंगल को गुरु देखता है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

V मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कV जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कV जाता है।

क्योंकि राहु V कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कV जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि V कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कV जाता है।

¡कपजलं तथा V में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूV एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।